2026 Volume: 02 Issue: 03 www.ijrpa.com ISSN 2456-9995 Review Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-07

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सांस्कृतिक अवधारणा का महत्त्व एवं विश्लेषण

***सुशील कुमार सिंह[1] और स्वाति मिश्रा[2]**

[1]व्याख्याता, टीचर्स ट्रैनिंग कॉलेज, भागलपुर (बिहार), संबद्ध - टी.एम.बी.यू, भागलपुर

[2]शोधार्थी, श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसे महिला विद्यापीठ, पुणे

Article Received: 28 January 2026
Article Revised: 17 February 2026
Published on: 09 March 2026

***Corresponding Author: सुशील कुमार सिंह**
व्याख्याता, टीचर्स ट्रैनिंग कॉलेज, भागलपुर (बिहार), संबद्ध - टी.एम.बी.यू, भागलपुर

DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.1651

शोध सार

भारत युगों से अपनी सांस्कृतिक संतृप्ता के लिए सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। विभिन्न संस्कृतियों और विचारधाराओं में विविधता होने के बावजूद भी उसकी अखंडता और एकनिष्ठा ज्यों की त्यों बनी हुई है। समय के साथ जैसे आधुनिकता की होड़ बढ़ती गई इसमें भी कुछ विकृतियों ने जन्म ले लिया हम अपनी मूल संस्कृति और परंपरा से दूर हो गए इस कारण देश की युवा पीढ़ी में अनुशासनहीनता, सतही मानसिकता और आत्मबल की शून्यता देखने को मिल रही है। भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति की परिकल्पना है कि वो देश के युवाओं में अपनी संस्कृति, सभ्यता तथा आध्यात्मिक दर्शन के प्रति उत्सुकता जागरूक करें और उन्हें इस बात का विश्वास दिलाएं की एक व्यक्ति तभी एक परिपूर्ण नागरिक बन सकता है जब वह अपने देश की संस्कृति और परंपरा को समझे तथा उसे अपनी विचारधारा में समाहित कर देश की उन्नति के लिए सदैव तत्पर रहे। शोधपत्र में NEP 2022 द्वारा सांस्कृतिक अवधारणा को विश्लेषित किया गया है कि हम किस प्रकार अपनी मूल संस्कृति को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाए ताकि युवाओं में इसका ज्ञान इस प्रकार समाहित हो की वो इससे कभी विलग न हो पाएं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस तथ्य पर भी बल देती है की शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रहकर कला, भाषा और लोक-परंपराओं के एकीकरण के माध्यम से समग्र शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। इसमें भारतीय ज्ञान प्रणालियों के पुनरुद्धार की चर्चा की गई है, जिससे विद्यार्थी अपनी भाषाई अस्मिता और क्षेत्रीय विरासत पर गर्व करना सीख सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वर्णित सांस्कृतिक अवधारणा के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि सांस्कृतिक बोध किस प्रकार विद्यार्थियों में सहिष्णुता और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे भारतीय मूल्यों को जागृत करता है।

मुख्य शब्द : संस्कृति, लोक-परंपरा, सांस्कृतिक अवधारणा, आध्यात्मिक, औद्योगिकरण, मूल्य, भाषा, स्मिता।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। जो प्राचीन काल से अपनी समृद्ध परंपरा,कला,दर्शन एवं शिक्षा के लिए विश्वगुरु के रूप में जानी जाती है । पौराणिक काल से विभिन्न संस्कृतियों एवं सभ्यता के होने के कारण विचारधाराओं और अवधारणाओं में कई भिन्नता भी देखने को मिली । सभ्यता और संस्कृति आपस में इतने जुड़े हुए है, कि एक के बिना दूसरे का अस्तित्व ही निष्प्राण प्रतीत होता है । संस्कृति के विषय में बाबू गुलाबराय का कथन है - "*संस्कृति की आत्मा के बिना सभ्यता का शरीर शव की भाँति निष्प्राण रहता है । विनय और शील के बिना कटी-छटी पोशाक, सुसज्जित बंगले, सेंट और पाउडर मनुष्य को सभ्य नहीं बना सकते । विनय और शील के बाहरी रूप को ही शिष्टाचार कहते हैं, किन्तु ये भी दिखावा मात्र नहीं है। शिष्टाचार का अर्थ है शिष्टों का आचरण, किन्तु इसमें रूढ़ि या परंपरा की भावना लगी रहती है। इसमें आंतरिक भावना प्रधान रहती है* ।"[1] उनके इस कथन से स्पष्ट होता है कि अगर हमें किसी देश की सभ्यता के विषय में जानना है तो सर्वप्रथम हमें वहाँ की संस्कृति के विषय में जानने की आवश्यकता है क्योंकि सभ्यता को संस्कृति से विलग नहीं किया जा सकता।

औद्योगिकरण के इस दौर में जब हर तरफ पश्चिमी संस्कृति का बोलबाला है तब ऐसे में अपने देश को इससे अछूता रख पाना अत्यंत कठिन कार्य है। आधुनिक बनने के इस होड़ ने सबसे ज्यादा अगर किसी को प्रभावित किया है तो वो है आज की नवीन पीढ़ी जो तकनीक की सभ्यता की ओर सबसे ज्यादा जिज्ञासु और आकर्षित है। तकनीक का ज्ञान या आधुनिक होना यह किसी भी दृष्टि से गलत नहीं है परन्तु तकनीक को स्वयं पर हावी होने देना, पूर्ण रूप से उसपर निर्भर हो जाना ये अपनी आत्मशक्ति और विचारों को पंगु बनाने जैसा है। हम ये भूल चुके है कि मनुष्य ने तकनीक को बनाया है तकनीक ने मनुष्य को नहीं, मानव के ज्ञान के बिना तकनीक का कोई अस्तित्व नहीं है। इस विषय पर अपनी बात रखते हुए अजय तिवारी ने अपनी पुस्तक '***आधुनिकता के पुनर्विचार***' में कहा है - "*नयी सामाजिक शक्तियाँ और नए संबंध पुराने ढाँचों को व्यवहार में भी तोड़ते हैं और चिंतन में भी चिंतन में अक्सर यह बदलाव भौतिक स्तर से ज़्यादा तेजी के साथ परिलक्षित होता है* ।"[2] इस कथन से ये भलीभांति स्पष्ट हो रहा है कि कोई भी वस्तु का सबसे ज्यादा प्रभाव मनुष्य की चिंतन शक्ति पर पड़ता है। जैसा कि हम जानते है भारत में युवाओं की आबादी सबसे ज्यादा है इसलिए ये आवश्यक है कि उनके विचारों में वो शक्ति हो जो देश की प्रगति के लिए कार्य करे न कि उसकी अवनति का कारण बने। इसके लिए ये आवश्यक है कि उनकी शिक्षा पद्धति में कुछ ऐसे परिवर्तन लाये जाएं जो उनके चिंतन प्रणाली को समृद्ध बनाये।

भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) का मुख्य दृष्टिकोण भी यही है कि युवाओं में एक समृद्ध चिंतन प्रणाली का विकास किस प्रकार किया जाएं ताकि वे एक परिपूर्ण नागरिक बन सके। इसी दूरदर्शिता को प्रतिफलित करने हेतु उन्होंने इसमें सांस्कृतिक अवधारणा को समाहित किया है जिससे वे अपनी प्राचीन संस्कृति, परंपरा, कला, दर्शन और अध्यात्म से जुड़ सकें और स्वयं को एक नवीन दृष्टि का परिचायक बना सके। इस दृष्टि के तहत एक ओर शिक्षा को अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में पहुंचाने का कार्य किया गया है तथा दूसरी तरफ उसे उपयुक्त और सुसंगठित बनाने का भी कार्य किया गया है। सामाजिक सेवा, सर्वव्यापकता और सभी धर्मों के प्रति प्रेम तथा सम्मान की भावना तथा अपने राष्ट्र की संस्कृति और परंपरा के प्रति गर्व की भावना एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति रूपी मानव मस्तिष्क के निर्माण संबंधी शिक्षा पद्धति को इस नीति में समाहित किया गया है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सांस्कृतिक अवधारणा के प्रमुख स्तंभ

भारतीय शिक्षा प्रणाली में सांस्कृतिक अवधारणा को केवल एक सैद्धांतिक विचार के रूप में नहीं, बल्कि व्यावहारिक स्तंभों के माध्यम से शिक्षा की मुख्यधारा में स्थापित किया गया है। इसका सबसे **प्रमुख स्तंभ** भारतीय संस्कृति और भाषाई विविधता है। विभिन्न सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य एवं बहुभाषावाद और मातृभाषा में शिक्षा विद्यार्थियों को उसकी मौलिक संस्कृति और भाषाई पहचान से जोड़े रखती है। शिक्षा को नीरसता से मुक्त करने के लिए कला और शिल्प का एकीकरण इस अवधारणा का **दूसरा अनिवार्य स्तंभ** है, जो विद्यार्थियों को भारत की विविध लोक-कलाओं और सांस्कृतिक धरोहरों का जीवंत अनुभव प्रदान करता है। ये सांस्कृतिक अवधारणा के स्तंभ न केवल विद्यार्थियों के संवेदनात्मक विकास में सहायक हैं, बल्कि उनके भीतर राष्ट्रीय अस्मिता और स्व-गौरव की भावना को भी पुष्ट करती हैं, जो एक आत्मनिर्भर और सचेत नागरिक के निर्माण हेतु अनिवार्य है।

इन सभी मानकों को एक विद्यार्थी में समाहित करने से उसमें व्यावहारिक ज्ञान का सृजन होता है और उसके भीतर किसी कार्य को करने का विवेक जागृत होता है । इस विषय के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है - "*भारतीय कला एवं संस्कृति का संवर्धन न केवल राष्ट्र बल्कि व्यक्तियों के लिए भी महत्वपूर्ण है । बच्चों में अपनी पहचान और अपनेपन के भाव तथा अन्य संस्कृतियों और पहचानों की सराहना का भाव पैदा करने के लिए सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति जैसी प्रमुख क्षमताओं को बच्चों में विकसित करना ज़रूरी है । बच्चों में अपने सांस्कृतिक इतिहास, कला, भाषा एवं परंपरा की भावना और ज्ञान के विकास द्वारा ही एक सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान बच्चों में निर्मित किया जा सकता है । अतः व्यक्तिगत एवं सामाजिक कल्याण के लिए सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति का योगदान महत्वपूर्ण है* ।"[3] इस कथन से ये बात तो स्पष्ट हो गई है कि बालक के

सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा प्रणाली में इन सभी बातों का होना अत्यंत आवश्यक है जिससे देश की नवीन पीढ़ी को अपने देश के प्राचीन गौरव इतिहास का ज्ञान प्राप्त हो सके। इन विचारों को संज्ञान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सांस्कृतिक अवधारणा के महत्त्व को विश्लेषित करने हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार हैं –

- **सांस्कृतिक चेतना और परिचय** - यह नीति सर्वप्रथम छात्रों में अपने देश के युगों से चले आ रहे गौरव गाथा के प्रति सांस्कृतिक चेतना जागृत करती है जिससे वो अपनी संस्कृति और परंपरा से खुद को जुड़ा हुआ पाते हैं । किसी भी छात्र में अगर प्रारंभ से ही शिक्षा की ऐसी चेतना जागृत की जाएं तो वो अपनी मूल जड़ता से कभी विलग नहीं हो पाता क्योंकि उसके हृदय में अपने देश के प्रति सम्मान की भावना होती है जो उसे अपने कर्तव्यपथ पर अडिग रहने की क्षमता प्रदान करती है । इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 संवैधानिक मूल्यों के साथ-साथ भारतीय होने के गर्व को भी पाठ्यक्रम के मूल लक्ष्य के रूप में स्थापित करती है। यह सांस्कृतिक जुड़ाव ही विद्यार्थियों में वसुधैव कुटुंबकम की भावना को वैश्विक नागरिकता के साथ समाहित करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

- **भाषाई बहुलता और अनेकभाषावाद** - राष्ट्रीय शिक्षा नीति(NEP 2020) में मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहन दिया गया है क्योंकि भाषाई बहुलता के कारण मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करना अत्यंत सहज और प्रभावी होगा सभी के लिए , बच्चों में संज्ञानात्मक कौशल के विकास में वृद्धि होगी । सांस्कृतिक मूल्यों की ओर जुड़ाव बढ़ेगा और अनेकभाषावाद को भारत की एकता, समृद्धि की धरोहर स्वरूप मानकर उसका सम्मान करने से छात्रों को अपनी मूल संस्कृति से जुड़कर वैश्विक स्तर पर विचार विमर्श करने में मदद मिलती है ।

NEP 2020 में इस संदर्भ में कहा गया है - "*अधिक उच्चतर शिक्षण संस्थानों तथा उच्चतर शिक्षा के और अधिक कार्यक्रमों में मातृभाषा/स्थानीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग किया जाएगा और / या कार्यक्रमों को द्विभाषित रूप में चलाया जाएगा ताकि पहुंच और सकल नामांकन अनुपात दोनों में बढ़ोत्तरी हो सके, इसके साथ ही सभी भारतीय भाषाओं की मजबूती, उपयोग एवं जीवंतता को प्रोत्साहन मिल सके; मातृभाषा/स्थानीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करने और / या कार्यक्रमों को द्विभाषित रूप में चलाने के लिए निजी प्रशिक्षण संस्थानों को भी प्रभावित किया जाएगा एवं बढ़ावा दिया जाएगा।*"[4] क्योंकि अब तक भारत में ऐसी बहुत सी भाषाएं है जो बिना संरक्षण के विलुप्त हो चुकी है या विलुप्त होने की कगार पर है उन भाषाओं के संरक्षण हेतु भी कई नीतियां बनाई जाए ।

- **कला और क्षेत्रीय कौशल का सम्मिलन** - NEP 2020 भारत की प्राचीन कला, हस्तशिल्प और क्षेत्रीय कौशल को शिक्षा नीति में समाहित करने पर बल देती है । जिससे छात्रों को कार्यात्मक ज्ञान प्राप्त हो सके और वह इसे अपने जीवन में कार्यान्वित कर सकें । साथ ही पौराणिक संस्कृति और परंपरा के संरक्षण पर भी विशेष बल दिया जाता है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस विषय में कहा गया है - "*संस्कृति का प्रसार करने का सबसे प्रमुख माध्यम कला है । कला- सांस्कृतिक पहचान, जागरूकता को समृद्ध करने और समुदायों को उन्नत करने के अलावा व्यक्तियों में संज्ञानात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को बढ़ाने तथा व्यक्तिगत प्रसन्नता को बढ़ाने के लिए जानी जाती है । व्यक्तियों की प्रसन्नता/कल्याण, संज्ञानात्मक विकास और सांस्कृतिक पहचान वह महत्वपूर्ण कारण हैं जिसके लिए सभी प्रकार की भारतीय कलाएँ, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा से आरंभ करते हुए शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों को प्रदान की जानी चाहिए* ।"[5]

- **शिक्षा का भारतीयकरण** - इस नीति का उद्देश्य नवीन पीढ़ी को पश्चिमीकरण की भावना से मुक्त कर भारतीय मूल्यों एवं परंपरा से जोड़ना है जिससे वे लोग अपने भीतर क्षेत्रीय और वैश्विक दोनों दृष्टिकोणों को समाहित कर अपनी विचारधारा को और समृद्ध कर सकें । आज के समय में जब उपनिवेशवादी व्यवस्था का परचम चारों ओर फैला हो तो ऐसी स्थिति में शिक्षा प्रणाली को इससे मुक्त करना एक कठिन कार्य है पर सरकार हर संभव प्रयास कर रही है ताकि इससे शिक्षा को मुक्त किया जा सकें । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक पाठ्यक्रम के साथ एकीकृत करके प्रस्तुत करने का प्रस्ताव देती है, ताकि शिक्षा केवल सैद्धांतिक विचारों का संग्रह न रहे। इसका लक्ष्य एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना है जो छात्र के भीतर अपनी जड़ों के प्रति हीनभावना को समाप्त कर उसे 'आत्मनिर्भर भारत' का मानसिक संबल प्रदान करे।

- **सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण** – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा भारत की संस्कृति, कला, दर्शन और इतिहास आदि के अध्ययन हेतु विभिन्न संस्थान बनाए जाए तथा डिजिटल स्तर पर भी इसके संरक्षण हेतु कई प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए हैं । अपनी प्राचीन धरोहर को संरक्षित करना केवल एक कार्य नहीं है बल्कि ये एक नैतिक जिम्मेदारी है जो निभाना अनिवार्य है । इस उत्तरदायित्व की पूर्ति हेतु वर्तमान शिक्षा नीति में 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन' (I.I.T.I) की स्थापना और संस्कृत सहित अन्य शास्त्रीय भाषाओं के संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है। इसके साथ ही, लुप्तप्राय कलाओं और ज्ञान-परंपराओं को 'डिजिटल रिपॉजिटरी' के माध्यम से भावी पीढ़ियों के लिए सहेजने का लक्ष्य रखा गया है। शोध का यह पक्ष स्पष्ट करता है कि जब एक छात्र अपनी ऐतिहासिक विरासतों और स्मारकों के

महत्त्व को पाठ्यक्रम के माध्यम से समझता है, तो वह केवल एक सूचना प्राप्त नहीं करता, बल्कि अपनी सभ्यता और संस्कृति का संरक्षक भी बनता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत सांस्कृतिक अवधारणा को समाहित करना केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि वर्तमान समय की अनिवार्य आवश्यकता है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में यदि हम अपनी मौलिक पहचान को विस्मृत कर देते हैं, तो भारतीय समाज का एक बड़ा वर्ग सांस्कृतिक शून्यता की ओर अग्रसर हो जाएगा, जो किसी भी राष्ट्र की अवनति का प्राथमिक एवं महत्वपूर्ण कारण बन सकता है। प्रस्तुत शोध यह स्पष्ट करता है कि सांस्कृतिक एकीकरण के बिना शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन बनकर रह जाती है, जबकि इसका वास्तविक उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए। इस नीति की महत्ता इस तथ्य में निहित है कि यह युवाओं में प्रारंभ से ही अपनी परंपराओं के प्रति गर्व का भाव जागृत करती है, जिससे वे मानसिक रूप से सशक्त और उद्देश्यपूर्ण नागरिक बन सकें। तार्किक दृष्टि से देखें तो संस्कृति का समावेश विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच और सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ाता है, जो आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में मानसिक संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली के पुनर्जागरण का एक ठोस प्रयास है। यह नीति आधुनिक विज्ञान और सनातन संस्कारों के मध्य एक ऐसा सेतु निर्मित करती है, जहाँ ज्ञान केवल सूचना न होकर एक जीवंत अनुभव बन जाता है। यदि वर्तमान शिक्षा नीति का क्रियान्वयन जमीनी स्तर पर कुशलतापूर्वक होता है, तो भारत न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप से भी पुनः 'विश्वगुरु' के पद पर प्रतिष्ठित हो सकेगा। यह शोध रेखांकित करता है कि देश की प्रगति तभी प्रशस्त होगी जब शिक्षा प्रणाली अपने गौरवशाली अतीत से प्रेरणा लेकर भविष्योन्मुख लक्ष्यों की ओर बढ़ेगी। प्रस्तुत विवेचन से हम इस नीति के उद्देश्य को भलीभांति समझ सकते है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में भारत की संस्कृति और परंपरा को समाहित कर युवकों में प्रारंभ से ही सांस्कृतिक महत्ता को स्थापित किया जा सकें ताकि हर परिस्थिति में वो अपने देश की प्रगति की राह में सदैव तत्पर रहें।

संदर्भ सूची

1. बाबू गुलाबराय, भारतीय संस्कृति, रविन्द्र प्रकाशन, पाटनकर बाजार ग्वालियर, पृष्ठ संख्या- 4, 1975

2. अजय तिवारी, आधुनिकता पर पुनर्विचार, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 28, 2024

3. शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार, पृष्ठ संख्या- 86

4. शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार, पृष्ठ संख्या- 89

5. शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार, पृष्ठ संख्या- 87
6. एन.सी.ई.आर.टी. (2023). भारतीय ज्ञान परंपरा: एक परिचय, नई दिल्ली। (आई.के.एस और प्राचीन धरोहरों के शिक्षण हेतु)
7. प्रो. अनिरुद्ध देशपांडे (2022). भारतीय शिक्षा का भारतीयकरण, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली। (पश्चिमीकरण से मुक्ति और भारतीय मूल्यों के संदर्भ में)
8. शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: भारतीय भाषाओं, कलाओं और संस्कृति को बढ़ावा देना. भारत सरकार. https://share.google/NsnMc0JK7oe7nkybK